तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ८ ॥

अर्थ - (च) और (सत् संख्या क्षेत्र स्पर्शन काल अन्तर भावाल्पबहुत्वैः) सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व, इन आठ अनुयोगों के द्वारा भी पदार्थ का ज्ञान होता है।

अध्याय १: सूत्र ८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - सूत्र का स्पष्टीकरण

सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्व [सूत्र १-४]

निक्षेप [सूत्र ५]

- के जानने के उपाय [सूत्र ६-प्रमाण , नय]
- के जानने के उपाय [सूत्र ७-निर्देशादि]
- के जानने के उपाय [सूत्र ८-सत् , संख्यादि]

अध्याय १: सूत्र ८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - सूत्र की विषय-वस्तु

विषय	विषय-वस्तु
सत् और संख्या	यह द्रव्य-गुण-पर्याय के सत्त्व की अपेक्षा से उपभेद है। सत्, सामान्य और संख्या, विशेष है।
क्षेत्र और स्पर्शन	यह क्षेत्र का उपभेद है। क्षेत्र, सामान्य और स्पर्शन, विशेष है।
काल और अन्तर	यह काल का उपभेद है। काल, सामान्य और अन्तर, विशेष है।
भाव और अल्पबहुत्व	यह भाव का उपभेद है। भाव, सामान्य और अल्पबहुत्व, विशेष है।

अध्याय १: सूत्र ८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - परिभाषा

विषय	विषय-वस्तु
सत्	वस्तु के अस्तित्व को सत् कहते हैं।
संख्या	वस्तु के परिमाणों की गणना को संख्या कहते हैं।
क्षेत्र	वस्तु के वर्तमानकालीन निवास को क्षेत्र कहते हैं।
स्पर्शन	वस्तु के त्रिकालवर्ती निवास को स्पर्शन कहते हैं।
काल	वस्तु के स्थिर रहने की मर्यादा को काल कहते हैं।
अन्तर	वस्तु के विरह काल को अन्तर कहते हैं।
भाव	गुण को अथवा औपशमिक, क्षायिक आदि पाँच भावों को भाव कहते हैं।
अल्पबहुत्व	अन्य पदार्थ की अपेक्षा से वस्तु की हीनता-अधिकता के वर्णन को अल्पबहुत्व कहते हैं।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - अनुयोग की परीभाषा

- **अनुयोग** – भगवान प्रणीत उपदेश विषय के अनुसार भिन्न-भिन्न अधिकार में कहा गया है, प्रत्येक अधिकार का नाम अनुयोग है। सम्यग्ज्ञान का उपदेश देने के लिए प्रवृत्त हुए अधिकार को अनुयोग कहते हैं।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - ८ प्रकार से सम्यग्दर्शन का वर्णन [1]

विषय	विषय-वस्तु
सत्	सम्यग्दर्शन के अस्तित्व को सत् कहते हैं।
संख्या	सम्यग्दर्शन के परिणामों की गणना को संख्या कहते हैं। [४ गति , ३ प्रकार]
क्षेत्र	सम्यग्दृष्टि के वर्तमानकालीन निवास को क्षेत्र कहते हैं। [४ गति , ३ प्रकार की अपेक्षा त्रसनाडी]
स्पर्शन	सम्यग्दृष्टि के त्रिकालवर्ती निवास को स्पर्शन कहते हैं। [४ गति , ३ प्रकार की अपेक्षा तीनलोक]

[1] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - ८ प्रकार से सम्यग्दर्शन का वर्णन [१]

विषय	विषय-वस्तु
काल	सम्यग्दर्शन के स्थिर रहने की मर्यादा को काल कहते हैं। [विशेष चर्चा आगे-स्लाईड-१८८]
अन्तर	सम्यग्दर्शन के विरह काल को अन्तर कहते हैं। [विशेष चर्चा आगे-स्लाईड-१८९]
भाव	सम्यग्दर्शन - स्व शुद्धात्मा के त्रिकाली ज्ञायकभाव का आश्रय है।
अल्पबहुत्व	अन्य पदार्थ [कर्म] की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन की हीनता-अधिकता के वर्णन को अल्पबहुत्व कहते हैं।

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - सम्यग्दर्शन का काल

- **सम्यग्दर्शन का काल**
  - **जघन्य**
    - ३ प्रकार के सम्यग्दर्शन का जघन्य से जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है।
  - **उत्कृष्ट**
    - औपशमिक — अन्तर्मुहूर्त
    - क्षायोपशमिक — ६६ सागर
    - क्षायिक
      - मोक्ष = सादि-अनन्त
      - संसार = ३३ सागर तथा अन्तर्मुहूर्त सहित ८ वर्ष कम दो कोडी पूर्व

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - सम्यग्दर्शन का अन्तर

- **सम्यग्दर्शन का अन्तर**
  - **जघन्य** — औपशमिक और क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन का जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है।
  - **उत्कृष्ट**
    - औपशमिक — असंख्यात वर्ष
    - क्षायोपशमिक — असंख्यात वर्ष

क्षायिक सम्यग्दर्शन होने के बाद वह सादि-अनन्त काल रहता है। उसमें अन्तर नहीं होता।

अध्याय १: सूत्र ८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - सूत्र का प्रयोजन

- **विस्तृत वर्णन का प्रयोजन** – कितने ही शिष्य अल्प कथन से विशेष तात्पर्य समझ लेते हैं और कितने ही शिष्य ऐसे होते हैं कि विस्तारपूर्वक कथन करने पर समझ सकते हैं। परम कल्याणमय आचार्य का सभी को तत्त्वों का स्वरूप समझाने का उद्देश्य है।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - सूत्र की विषयवस्तु

- **विस्तृत वर्णन का प्रयोजन** – प्रमाण, नय से ही समस्त पदार्थों का ज्ञान हो सकता है, तथापि विस्तृत कथन से समझ सकनेवाले जीवों को निर्देश आदि तथा सत् संख्यादि का ज्ञान कराने के लिए पृथक्–पृथक् सूत्र कहे हैं। ऐसी शङ्का ठीक नहीं है कि एक सूत्र में दूसरे का समावेश हो जाता है, इसलिए विस्तारपूर्वक कथन व्यर्थ है।

अध्याय १: सूत्र ८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

प्रश्न - इस सूत्र में ज्ञान के सत्-संख्यादि आठ भेद ही क्यों कहे गए हैं, कम या अधिक क्यों नहीं कहे गए ?

उत्तर - निम्नलिखित आठ प्रकार का निषेध करने के लिए वे आठ भेद कहे गए हैं -

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- १- नास्तिक कहता है कि ‘कोई वस्तु है ही नहीं।’ इसलिए ‘सत्’ को सिद्ध करने से उस नास्तिक का तर्क खण्डित कर दिया गया है।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- २- कोई कहता है कि 'वस्तु' एक ही है, उसमें किसी प्रकार के भेद नहीं हैं। '**संख्या**' को सिद्ध करने से यह तर्क खण्डित कर दिया गया है।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- ३- कोई कहता है कि ‘वस्तु के प्रदेश (आकार) नहीं हैं।’ ‘क्षेत्र’ के सिद्ध करने से यह तर्क खण्डित कर दिया गया है।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- ४- कोई कहता है कि 'वस्तु क्रिया रहित है।' '**स्पर्शन**' के सिद्ध करने से यह तर्क खण्डित कर दिया गया।[नोट - एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना, सो क्रिया है।]

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- ५– 'वस्तु का प्रलय (सर्वथा नाश) होता है' ऐसा कोई मानता है। '**काल**' के सिद्ध करने से यह तर्क खण्डित कर दिया गया है।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- ६- कोई यह मानता है कि 'वस्तु क्षणिक है' 'अन्तर' के सिद्ध करने से यह तर्क खण्डित कर दिया गया है।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- ७- कोई यह मानता है कि 'वस्तु' कूटस्थ है। 'भाव' के सिद्ध करने से यह तर्क खण्डित कर दिया गया है। (जिसकी स्थिति न बदले, उसे कूटस्थ कहते हैं।)

अध्याय १: सूत्र ८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८ ।। - ज्ञान सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- ८- कोई यह मानता है कि 'वस्तु सर्वथा एक ही है अथवा वस्तु सर्वथा अनेक ही हैं।' 'अल्पबहुत्व' के सिद्ध करने से यह तर्क खण्डित कर दिया गया है।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्रभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८ ।। - सूत्र का सिद्धान्त

- जिज्ञासु जीवों को जीवादि द्रव्य तथा तत्त्वों का जानना, छोड़ने योग्य मिथ्यात्व-रागादि तथा ग्रहण करने योग्य स यग्दर्शनादि के स्वरूप की पहिचान करना, प्रमाण और नयों के द्वारा तत्त्वज्ञान की प्राप्ति करना तथा निर्देश-स्वामित्वादि और सत्-सं यादि के द्वारा उनका विशेष जानना चाहिए।

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८।। - अन्तर - सूत्र ७ और ८

सूत्र ८ का विषय	सूत्र ७ का विषय
सत्	निर्देश
संख्या	विधान
क्षेत्र	अधिकरण
स्पर्शन	क्षेत्र [सूत्र ८ का विषय]
काल	स्थिति
अन्तर	-
भाव	भावनिक्षेप [सूत्र ५ का विषय]
अल्पबहुत्व	-

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ८

जिनवाणी स्तुति